वा।सं

6662

428
द्वि/वा/सं

प्रारम्भिक

संस्कृत वाक्य संग्रह

छात्रों के नाम-ग्राम आदि के सम्बन्ध में प्रश्न एवं उत्तर

प्र०—तव किं नाम अस्ति ?	तुम्हारा क्या नाम है ?
उ०—मम नाम······अस्ति	मेरा नाम······ है।
प्र०—त्वं किं पठसि ?	तुम क्या पढ़ते हो ?
उ०—अहं हिन्दीं संस्कृतं तथा अंग्रेजीं पठामि	मैं हिन्दी संस्कृत तथा अंग्रेजी पढ़ता हूँ।
प्र०—त्वं कुत्र पठसि ?	तुम कहाँ पढ़ते हो ?
उ०—अहं···पाठशालायां पठामि	मैं···पाठशाला में पढ़ता हूँ।
प्र०—त्वं कस्यां कक्षायां पठसि	तुम किस कक्षा में पढ़ते हो ?
उ०—अहं······ कक्षायां पठामि	मैं······कक्षा में पढ़ता हूँ।
प्र०—त्वं कुत्र निवससि ?	तुम कहाँ रहते हो ?
उ०—अहं···स्थाने निवसामि	मैं···स्थान में रहता हूँ।
प्र०—तव प्रदेशः कः	तुम्हारा प्रदेश कौन है ?
उ०—मम प्रदेशः······ अस्ति	मेरा प्रदेश···है।
प्र०—तव मण्डलं किम् ?	तुम्हारा कौन जिला है ?
उ०—मम मण्डलम्···अस्ति ?	मेरा जिला······ है।
प्र०—तव ग्रामः······कः अस्ति	तुम्हारा ग्राम कौन है ?
उ०—मम ग्रामः······अस्ति	मेरा गाँव······ है।
प्र०—तव पत्रालयः कः ?	तुम्हारा डाकखाना कौन है ?
उ०—मम पत्रालयः······अस्ति	मेरा डाकखाना···है।

सूचना—यदि बड़े छात्रों से पूछना हो तो त्वं तव के स्थान पर भवान्, भवतः तथा पठसि, निवससि के स्थान पर पठति, निवसति ऐसा बोलना चाहिये।

प्र०—तव आरक्षिस्थानं किम् ? तुम्हारा थाना क्या है ?
उ०—मम आरक्षिस्थानम्···अस्ति मेरा··· ··थाना है।
प्र०—कुशलं वर्तते ? कुशल तो है ?
उ०—आम्, कुशलं वर्तते हाँ, कुशल है।

आज्ञावाचक क्रियापद		स्वीकारवाचक क्रियापद	
संस्कृत	हिन्दी	संस्कृत	हिन्दी
आगम्यताम्[1]	आइये, आओ	आगच्छामि	आता हूँ[2]
गम्यताम्	जाइये, जाओ	गच्छामि	जाता हूँ
उपविश्यताम्	बैठिये, बैठो	उपविशामि	बैठता हूँ
उत्थीयताम्	उठिये, उठो	उत्तिष्ठामि	उठता हूँ
दीयताम्	दीजिये, दो	ददामि	देता हूँ
गृह्यताम्	लीजिये, लो	गृह्णामि	लेता हूँ
कथ्यताम्	कहिये, कहो	कथयामि	कहता हूँ
श्रूयताम्	सुनिये, सुनो	शृणोमि	सुनता हूँ

१—ये सभी क्रियापद कर्मवाच्य एवं भाववाच्य के हैं, अतः इनके साथ "भवता भवद्भ्याम् भवद्भिः, त्वया युवाभ्याम् युष्माभिः" आदि तृतीयान्त कर्तृपदों का प्रयोग करना चाहिए, भवान्, त्वं आदि का नहीं।

२—बालिकाओं को "आता हूँ जाता हूँ" आदि के स्थान पर" आती हूँ जाती हूँ" ऐसा कहना चाहिए।

३—ऊपर के सभी आज्ञावाचक क्रियापदों में एक दो अन्य पदों को भी जोड़कर बोलने का अभ्यास करना चाहिए। जैसे—"आगम्यताम्" के साथ अत्र (यहाँ), शीघ्रं (जल्दी), नीचैः (नीचे) उपरि (ऊपर)। सम्यक् (ठीक तरह से) शनैः शनैः (धीरे-धीरे) क्षणम् (थोड़ी देर) किञ्चित् (कुछ) किमपि (कुछ भी) आदि पदों का प्रयोग करना चाहिये।

चल्यताम्	चलिये, चलो	चलामि	चलता हूँ
विरम्यताम्	रुकिए, रुको	विरमामि	रुकता हूँ
भक्ष्यताम्	खाइये, खाओ	भक्षयामि	खाता हूँ
पीयताम्	पीजिये, पीओ	पिबामि	पीता हूँ
अपसृयताम्	हटिये, हटो	अपसरामि	हटता हूँ
दृश्यताम्	देखिये, देखो	पश्यामि	देखता हूँ
आनीयताम्	ले आइये, ले आओ	आनयामि	ले आता हूँ
नीयताम्	ले जाइये, ले जाओ	नयामि	ले जाता हूँ
पठ्यताम्	पढ़िये, पढ़ो	पठामि	पढ़ता हूँ
लिख्यताम्	लिखिये, लिखो	लिखामि	लिखता हूँ
क्रियताम्	कीजिये, करो	करोमि	करता हूँ
उच्यताम्	बोलिये, बोलो	वदामि	बोलता हूँ
त्यज्यताम्	छोड़िये, छोड़ो	त्यजामि	छोड़ता हूँ
उद्घाट्यताम्	खोलिये, खोलो	उद्घाटयामि	खोलता हूँ
पिधीयताम्	बन्द कीजिये,बन्दकरो	पिदधामि	बन्द करता हूँ
पाठ्यताम्	पढ़ाइए, पढ़ाओ	पाठयामि	पढ़ाता हूँ
लेख्यताम्	लिखाइये,लिखाओ	लेखयामि	लिखाता हूँ
दर्श्यताम्	दिखाइये दिखाओ	दर्शयामि	दिखाता हूँ
उत्थाप्यताम्	उठाइये, उठाओ	उत्थापयामि	उठाता हूँ
ज्वाल्यताम्	जलाइये, जलाओ	ज्वालयामि	जलाता हूँ
निर्वाप्यताम्	बुझाइये, बुझाओ	निर्वापयामि	बुझाता हूँ
गीयताम्	गाइये, गाओ	गायामि	गाता हूँ
श्राव्यताम्	सुनाइये, सुनाओ	श्रावयामि	सुनाता हूँ
स्थाप्यताम्	रखिये, रखो	स्थापयामि	रखता हूँ
सम्मार्ज्यताम्	बुहारिये, बुहारो	सम्मार्जयामि	बुहारता हूँ
प्रक्षाल्यताम्	धोइये, धोओ	प्रक्षालयामि	धोता हूँ

आस्तीर्यताम्	बिछाइये, बिछाओ	आस्तृणोमि	बिछाता हूँ
अपसार्यताम्	हटाइये, हटाओ	अपसारयामि	हटाता हूँ
शय्यताम्	सोइये, सोओ	शये	सोता हूँ
जागर्य्यताम्	जागिये, जागो	जागर्मि	जागता हूँ
पृच्छ्यताम्	पूछिये, पूछो	पृच्छामि	पूछता हूँ

क्षम्यताम् — क्षमा कीजिये, क्षमा करो

तूष्णीं स्थीयताम् — चुप रहिये, चुप रहो

कुछ आज्ञावाचक वाक्य

गच्छ गच्छ	जाओ जाओ	आगच्छ आगच्छ	आओ आओ
चल चल	चलो चलो	कथय कथय	कहो कहो
वद वद	बोलो बोलो	तिष्ठ तिष्ठ	ठहरो ठहरो
श्रृणु श्रृणु	सुनो सुनो	अपसर अपसर	हटो हटो
गन्तुं देहि	जाने दो	आगन्तुं देहि	आने दो

कुछ प्रश्नवाचक वाक्य

किं करोषि ?	क्या करते हो ?	किं याचसे ?	क्या माँगते हो ?
किं कथयसि ?	क्या कहते हो ?	किं पश्यसि ?	क्या देखते हो ?
किं पृच्छसि ?	क्या पूछते हो ?	कुत्र गच्छसि ?	कहाँ जाते हो ?
किं इच्छसि ?	क्या चाहते हो ?	किम् अन्वेषयसि?	क्या ढूँढ़ते हो ?

भवान् किं करोति ?	आप क्या करते हैं ?
भवान् किम् इच्छति ?	आप क्या चाहते हैं ?
भवान् कुत्र गच्छति ?	आप कहाँ जाते हैं ?
भवान् किं कथयति ?	आप क्या कहते हैं ?
भवान् किं पृच्छति ?	आप क्या पूछते हैं ?
भवान् किम् अन्वेषयति ?	आप क्या ढूँढ़ते हैं ?
भवान् किं याचते ?	आप क्या माँगते हैं ?

कुछ और वाक्य

जानामि	जानता हूँ	अस्ति, वर्तते	है
न जानामि	नहीं जानता हूँ	किं वर्तते ?	क्या है ?
इच्छामि	चाहता हूँ	न वर्तते	नहीं है
न इच्छामि	नहीं चाहता हूँ	न किमपि	कुछ नहीं
आं श्रीमन्	जी हाँ	इष्यते	चाहिये
नहि श्रीमन्	जी नहीं	न इष्यते	नहीं चाहिये

गुरुओं से आज्ञा लेने के वाक्य

जलं पातुम् इच्छामि	जल पीना चाहता हूँ ।
जलं पातुं गच्छामि	जल पीने जाता हूँ ।
भोजनं कर्तुं गच्छामि	भोजन करने जाता हूँ ।
लघुशंकां कर्तुं गच्छामि	लघुशंका करने जाता हूँ ।
पाठं पठितुम् इच्छामि	पाठ पढ़ना चाहता हूँ ।
गृहं गन्तुम् इच्छामि	घर जाना चाहता हूँ ।
आपणं गच्छामि	बाजार जाता हूँ ।
अद्य अवकाशम् इच्छामि	आज छुट्टी चाहता हूँ ।
अनुवादं लिखितुम् इच्छामि	अनुवाद लिखना चाहता हूँ ।
अनुवादं दर्शयितुं इच्छामि	अनुवाद दिखाना चाहता हूँ ।
किञ्चित् प्रष्टुम् इच्छामि	कुछ पूछना चाहता हूँ ।
किञ्चित् निवेदयितुम् इच्छामि	कुछ कहना चाहता हूँ ।
आगन्तुं शक्नोमि ?	क्या मैं आ सकता हूँ ?

(इन वाक्यों के पहले विद्यार्थी "श्रीमन्" पद जोड़ लिया करें)

छात्रों को आज्ञा देने के वाक्य

अत्र आगच्छ	यहाँ आओ	पाठं पठ	पाठ पढ़ो
तत्र गच्छ	वहाँ जाओ	लेखं लिख	लेख लिखो

उत्तिष्ठ	उठो	शुद्धं पठ	शुद्ध पढ़ो
उपविश	बैठो	सुन्दरं लिख	सुन्दर लिखो

लिपिपुस्तिकाम् आनय	कॉपी लाओ
अनुवादं दर्शय	अनुवाद दिखाओ
पाठं श्रावय	पाठ सुनाओ
गणितं लिख	हिसाब लिखो
एकं गानं श्रावय	एक गाना सुनाओ
पाठं कण्ठस्थीकुरु	पाठ याद करो
द्रुतम् आगच्छ	जल्दी आओ
सावधानो भव	सावधान हो
कर्णौ स्पृश	कान पकड़ो
कोलाहलं मा कुरु	हल्ला मत करो
सूत्रं कर्तय	सूत कातो
पुष्पाणि सिञ्च	फूल सींचो
प्रार्थनां कारय	प्रार्थना कराओ

(बहुवचन में क्रियाओं के आगे, "त" का प्रयोग करना चाहिये ।)

छात्रों से कहने योग्य कुछ और वाक्य

कथं न पठसि ?	क्यों नहीं पढ़ते हो ?
कथं न लिखसि ?	क्यों नहीं लिखते हो ?
कथं न वदसि ?	क्यों नहीं बोलते हो ?
कथं न उत्तरं ददासि ?	क्यों नहीं उत्तर देते हो ?
किञ्चित् वक्तव्यं वर्तते ?	कुछ कहना है ?
किञ्चित् प्रष्टव्यं वर्तते ?	कुछ पूछना है ?
क्वचित् गन्तव्यं वर्तते ?	कहीं जाना है ?
कुत्र गतवान् आसीः ?	कहाँ गये थे ?

जानासि ?	जानते हो ?	चलसि ?	चलते हो ?
बुध्यसे ?	समझते हो ?	आगच्छसि ?	आते हो ?
शृणोसि ?	सुनते हो ?	गोपायसि ?	छिपाते हो ?
निद्रासि ?	सोते हो ?	असत्यं वदसि ?	झूठ बोलते हो ?
ज्ञातम् ?	मालूम हुआ ?	पठितम् ?	पढ़ लिया ?
बुद्धम् ?	समझ लिया ?	लिखितम् ?	लिख लिया ?
श्रुतम् ?	सुन लिया ?	मिलितम् ?	मिल गया ?
स्मृतम् ?	याद आया ?	विस्मृतम् ?	भूल गया ?

इन वाक्यों का उत्तर देते समय विद्यार्थियों "हां" कहना हो तो "आँ श्रीमन्" तथा "नहीं कहना हो तो "नहि श्रीमन्" कहा करें ।

6662

कुछ आज्ञा लेने के वाक्य

पठानि	पढ़ूँ	गच्छानि	जाऊँ	करवाणि	करूँ
लिखानि	लिखूँ	आगच्छानि	आऊँ	कथयानि	कहूँ
वाचयानि	बाचूँ	नयानि	ले जाऊँ	वदानि	बोलूँ
श्रावयानि	सुनाऊँ	आनयानि	ले आऊँ	चलानि	चलूँ
दर्शयानि	दिखाऊँ	तिष्ठानि	ठहरूँ	वादयानि	बजाऊँ
पृच्छानि	पूछूँ	उपविशानि	बैठूँ	पाठयानि	पढ़ाऊँ
त्यजानि	छोड़ दूँ	आह्वयानि	बुलाऊँ	लेखयानि	लिखाऊँ

गन्तुं शक्नोमि ?	जा सकता हूँ ?
आगन्तुं शक्नोमि ?	आ सकता हूँ ?

कुछ भूतकाल के क्रियापद

कृतवान	किया	नीतवान्	ले गया	दत्तवान्	दिया
गतवान्	गया	आनीतवान्	ले आया	गृहीतवान्	लिया

आगतवान्	आया	श्रुतवान्	सुना	भुक्तवान्	खाया
पठितवान्	पढ़ा	दृष्टवान्	देखा	पीतवान्	पीया
लिखितवान्	लिखा	पृष्टवान्	पूछा	पाठितवान्	पढ़ाया
ज्ञातवान्	जाना	कथितवान्	कहा	लेखितवान्	लिखाया
चोरितवान्	चुराया	विस्मृतवान्	भूल गया	श्रावितवान्	सुनाया
गोपितवान्	छिपाया	धृतवान्	रखा	दर्शितवान्	दिखाया

१—इन पदों में विद्यार्थी अहं, त्वं, भवान्, सः, यः, अयम्, आदि कर्तृपदों को तथा कि, कुत्र, कदा, कथम्, कुतः आदि अव्ययों को जोड़कर वाक्य बनावें तथा आपस में बोलने का अभ्यास करें।

२—स्त्रीलिंग में "वान्" के स्थान पर "वती" लगाना चाहिये। जैसे कृतवती, गतवती आदि। स्त्रीलिंग में अहम्, त्वम्, भवती, सा, या, का, इयम् आदि कर्तृपद लगा कर बोलना चाहिये।

कुछ भविष्यत्काल के क्रियापद

करिष्यसि	करोगे ?	करिष्यामि	करूँगा
पठिष्यसि	पढ़ोगे ?	पठिष्यामि	पढ़ूँगा
लेखिष्यसि	लिखोगे ?	लेखिष्यामि	लिखूँगा
वदिष्यसि	बोलोगे ?	वदिष्यामि	बोलूँगा
श्रावयिष्यसि	सुनाओगे ?	श्रावयिष्यामि	सुनाऊँगा
दर्शयिष्यसि	दिखाओगे ?	दर्शयिष्यामि	दिखाऊँगा
कथयिष्यसि	कहोगे ?	कथयिष्यामि	कहूँगा
गमिष्यसि	जाओगे ?	गमिष्यामि	जाऊँगा
चलिष्यसि	चलोगे ?	चलिष्यामि	चलूँगा
मिलिष्यसि	मिलोगे ?	मिलिष्यामि	मिलूँगा

नेष्यसि	ले जाओगे	नेष्यामि	ले जाऊँगा
आनेष्यसि	ले आओगे	आनेष्यामि	ले आऊँगा

प्रश्नवाचक क्रियापदों में 'सि' के स्थान पर 'ति' लगाकर विद्यार्थी प्रथम पुरुष में वाक्य बनाने का अभ्यास करें।

विद्यार्थियों को सावधान करने के कुछ वाक्य

शीघ्रं गच्छेः	जल्दी जाना	शुद्धं लिखेः	शुद्ध लिखना
शीघ्रम् आगच्छेः	जल्दी आना	अशुद्धं न पठेः	अशुद्ध न पढ़ना
विलम्बं न कुर्याः	बिलम्ब न करना	न विस्मरेः	भूलना नहीं
एवं न कुर्याः	ऐसा न करना	अवश्यम् आनयेः	जरूर लाना

अतिथिसत्कारसम्बन्धी वाक्य

नमामि, प्रणमामि, नमस्करोमि	प्रणाम। नमस्कार।
स्वागतं श्रीमताम्	आप का स्वागत है।
अपि सकुशलं समागताः श्रीमन्तः?	आप सकुशल तो आ गये?
कृतकृत्याः वयं श्रीमतां दर्शनेन	आपके दर्शन से हम कृतकृत्य हो गये
अनेन मार्गेण आगम्यताम्	इस मार्ग से आइये।
कृपया अत्रैव उपानहौ मुच्येताम्	कृपया यहीं जूता उतार दें।
अत्र वस्तूनि रक्ष्यन्ताम्	यहाँ सामान रक्खें।
इदं श्रीमताम् आवासस्थानम्	यह आपके ठहरने का स्थान है।
शौचं गम्यताम्	शौच जायें।
दन्तधावनं क्रियताम्	दतुअन करें।
स्नानं विधीयताम्	स्नान करें।
अयं शौचालयः अस्ति	यह शौचालय (पाखाना) है।
अत्र मृत्तिका वर्तते	यहाँ मिट्टी है।
इदं दन्तधावनं वर्तते	यह दतुअन है।
इदं धौतवस्त्रं वर्तते	यह धोती है।

इयम् अंगप्रोञ्छनी अस्ति	यह अगौंछी है।
इदं तैलं वर्तते	यह तेल है।
एष दर्पणः अस्ति	यह आइना है।
इयं कंकतिका वर्तते	यह कंघी है।
इदं पूजासनं वर्तते	यह पूजा के लिये आसन है।
इमानि पुष्पाणि सन्ति	ये फूल हैं।
जलपानं विधीयताम्	जलपान किया जाय।
भोजनार्थं चल्यताम्	भोजन के लिये चला जाय।
अयं भोजनालयः अस्ति	यह भोजनालय है।
इदम् आसनं वर्तते	यह आसन है।
ओदनं गृह्यताम्	भात लें।
द्विदलं गृह्यताम्	दाल लें।
शाकं गृह्यताम्	साग लें।
शष्कुली गृह्यताम्	पूड़ी लें।
दधि गृह्यताम्	दही लें।
शर्करा गृह्यताम्	चीनी लें।
पर्पटः गृह्यताम्	पापड़ लें।
मोदकं गृह्यताम्	मिठाई लें।
अवलेहो गृह्यताम्	चटनी लें।
ताम्बूलं गृह्यताम्	पान लें।
पूगीफलं गृह्यताम्	सुपारी लें।
अपरमपि किञ्चिदिष्यते ?	और भी कुछ चाहिये ?
स्वल्पमपि गृह्यताम्	थोड़ा भी ले लीजिये।

भोजनालयसम्बन्धी वाक्य

पाकस्थानं लिप्यताम्	चौका लगाओ।
पात्राणि मार्ज्यन्ताम्	बरतन माँजो।

भोजनसामग्री आनीयताम्	भोजन का सामान लाओ।
अग्निः प्रज्वाल्यताम्	आग जलाओ।
इन्धनम् आनीयताम्	लकड़ी लाओ।
इन्धनं छिद्यताम्	लकड़ी चीरो।
भोजनसामग्री एकत्र क्रियताम्	भोजन सामग्री इकट्ठी करो।
तण्डुलं प्रक्षाल्यताम्	चावल धोओ।
पिष्टकं पिण्डीक्रियताम्	आटा सानो।
स्थाली अधिरोप्यताम्	बटुली चढ़ाओ।
उपस्करः पिष्यताम्	मसाला पीसो।
लवणं प्रक्षिप्यताम्	नमक डालो।
शाकः कर्त्यताम्	साग बनाओ।
शाकः धूपाय्यताम्	शाग छौंको।
अवलेहः निर्मीयताम्	चटनी बनाओ।
द्विदले घृतं प्रक्षिप्यताम्	दाल में घी डालो।
रोटिकायां घृतं समज्यताम्	रोटी में घी लगाओ।
भोजनं परिवेष्यताम्	भोजन परोसो।
आगम्यताम्, सम्पन्ना रसवती	आइये, रसोई तैयार है।

आवश्यक शब्द-संग्रह

फल-वर्ग

आम	आम्रम्	केला	कदली
जामुन	जम्बूफलम्	बड़हल	लकुचम्
अमरूद	पेरुकम्	इमली	अम्लिका
महुआ	मधूकम्	अमड़ा	आम्रातकम्
कटहल	पनसम्	अँवरा	आमलकम्
शरीफा	सीताफलम्	निम्बू	निम्बुकम्
बैर	बदरी	कँइत	कपित्थम्
		दाख	द्राक्षा

इयम् अंगप्रोञ्छनी अस्ति	यह अगौंछी है ।
इदं तैलं वर्तते	यह तेल है ।
एष दर्पणः अस्ति	यह आइना है ।
इयं कंकतिका वर्तते	यह कंघी है ।
इदं पूजासनं वर्तते	यह पूजा के लिये आसन है ।
इमानि पुष्पाणि सन्ति	ये फूल हैं ।
जलपानं विधीयताम्	जलपान किया जाय ।
भोजनार्थं चल्यताम्	भोजन के लिये चला जाय ।
अयं भोजनालयः अस्ति	यह भोजनालय है ।
इदम् आसनं वर्तते	यह आसन है ।
ओदनं गृह्यताम्	भात लें ।
द्विदलं गृह्यताम्	दाल लें ।
शाकं गृह्यताम्	साग लें ।
शष्कुली गृह्यताम्	पूड़ी लें ।
दधि गृह्यताम्	दही लें ।
शर्करा गृह्यताम्	चीनी लें ।
पर्पटः गृह्यताम्	पापड़ लें ।
मोदकं गृह्यताम्	मिठाई लें ।
अवलेहो गृह्यताम्	चटनी लें ।
ताम्बूलं गृह्यताम्	पान लें ।
पूगीफलं गृह्यताम्	सुपारी लें ।
अपरमपि किञ्चिदिष्यते ?	और भी कुछ चाहिये ?
स्वल्पमपि गृह्यताम्	थोड़ा भी ले लीजिये ।

भोजनालयसम्बन्धी वाक्य

पाकस्थानं लिप्यताम्	चौका लगाओ ।
पात्राणि मार्ज्यन्ताम्	बरतन माँजो ।

भोजनसामग्री आनीयताम्	भोजन का सामान लाओ।
अग्निः प्रज्वाल्यताम्	आग जलाओ।
इन्धनम् आनीयताम्	लकड़ी लाओ।
इन्धनं छिद्यताम्	लकड़ी चीरो।
भोजनसामग्री एकत्र क्रियताम्	भोजन सामग्री इकट्ठी करो।
तण्डुलं प्रक्षाल्यताम्	चावल धोओ।
पिष्टकं पिण्डीक्रियताम्	आटा सानो।
स्थाली अधिरोप्यताम्	बटुली चढ़ाओ।
उपस्करः पिष्यताम्	मसाला पीसो।
लवणं प्रक्षिप्यताम्	नमक डालो।
शाकः कर्त्यताम्	साग बनाओ।
शाकः धूपाय्यताम्	शाग छौंको।
अवलेहः निर्मीयताम्	चटनी बनाओ।
द्विदले घृतं प्रक्षिप्यताम्	दाल में घी डालो।
रोटिकायां घृतं समज्यताम्	रोटी में घी लगाओ।
भोजनं परिवेष्यताम्	भोजन परोसो।
आगम्यताम्, सम्पन्ना रसवती	आइये, रसोई तैयार है।

आवश्यक शब्द-संग्रह

फल-वर्ग

आम	आम्रम्	केला	कदली
जामुन	जम्बूफलम्	बड़हल	लकुचम्
अमरूद	पेरुकम्	इमली	अम्लिका
महुआ	मधूकम्	अमड़ा	आम्रातकम्
कटहल	पनसम्	अँवरा	आमलकम्
शरीफा	सीताफलम्	निम्बू	निम्बुकम्
बैर	बदरी	कँइत	कपित्थम्
		दाख	द्राक्षा

किसमिस	क्षुद्रद्राक्षा
मूँगफली	मण्डपी
बादाम	बादामम्
खजूर	खर्जूरम्
छुहाड़ा	शुष्कखर्जूरम्
अखरोट	अक्षोटकम्
अंगूर	आमद्राक्षा
सेव	सेवं, बदरम्
नासपाती	रुचिफलम्
नारंगी	नारंगम्
नारियल	नारिकेलम्
अनार	दाडिमम्
पिस्ता	निकोचकम्
चिरौंजी	प्रियालम्
रड़मेवा	एरण्डर्चिभिटम्
खरबूजा	खर्बूजः
तरबूजा	कालिंगम्
ककड़ी	कर्कटी
खीरा	त्रपुसम्
फूँट	स्फुटी
कन्द	कन्दः
सुथनी	पिंडालुः
सिघाड़ा	शृङ्गाटकः

धान्य-वर्ग

गेहूँ	गोधूमः
जव	यवः
रहर	आढकी
चना	चणकः
मटर	करेणुः
मूँग	मुद्गः
उड़द	माषः
सरसों	सर्षपः
मकई	मकायः
बजड़ा	वर्जरी
मड़ुवा	मडकः
मसुरी	मसूरः
साठी	षष्ठिकः
धान	धान्यम्
सावाँ	श्यामाकः
टँगुनी	कगुः प्रियंगुः
कोदो	कोद्रवः

गृह वर्ग

कोठरी	प्रकोष्ठः
दालान	द्वारप्रकोष्ठः
ओसारा	प्रघणः
खिड़की	पक्षद्वारकम्
झरोखा	गवाक्षः

गृह-वस्तु वर्ग

झाड़ू	मार्जनी
चूल्हा	चुल्लिका
खूंटी	नागदन्तः

अरगनी	लङ्गनी
ताला	तालकम्
चाबी	ताली
खाट	खट्वा
पलंग	पर्यङ्कः
कुल्हाड़ी	कुठारः
खुरपा	क्षुरप्रः
हंसुआ	दात्रम्
छेदनी	छेदनी
छूरी	छूरिका
कैंची	कर्तरी
सरौता	शंकुला
पीढ़ा	पीठम्
चौकी	पीठिका
दीआ	दीपकः
बत्ती	वर्तिका
ऐना	दर्पणः
कंघी	कंकतिका
सूई	सूचिः
डोरा	सूत्रं, तन्तुः
बोरा	गोणी
जूता	उपानत् (स्त्री)
छाता	छत्रम्
छड़ी	यष्टिका
खड़ाऊँ	काष्ठपादुका
सीढ़ी	निःश्रेणी
पंखा, बेना	व्यजनम्
घड़ी	घटीयन्त्रम्
तराजू	तुला
सन्दूक	मंजूषा
पेटी	पेटिका

यान-वर्ग

सवारी	यानम्
गाड़ी	शकटः, शकटी
रेलगाड़ी	वाष्पशकटी
बैलगाड़ी	गन्त्री
हवाई जहाज	वायुयान्
जहाज	पोतः

वस्त्र-वर्ग

धोती	अधोवस्त्रम्
साड़ी	शाटी
लँगौटा	कौपीनम्
कमीज	कंचुकः
हाफकमीज	अर्धकंचुकः
अंगरखा	अंगरक्षकम्
चद्दर	उत्तरीयम्
अगौछी	अंगप्रोंछनी
रूमाल	कर्पटः
पगड़ी	उष्णीषः
टोपी	टोपिका
बिछौना	आस्तरणम्

तकिया	उपधानम्
रजाई	तूलपटी
कंबल	कम्बलः
गद्दी	गर्दि्दका
तोषक	तूलिका

शाक-वर्ग

तरकारी	शाकः
आलू	आलुः
परवल	पटोलः
कोंहड़ा	कूष्माण्डः
लौकी	अलाबुः (स्त्री)
भिंडी	कोशातकी
रामतरोई	राजकोषातकी
घेवड़ा, नेनुआ	महाकोशातकी
भंटा	वृन्ताकः
करैला	कारवेल्लम्
मूली	मलकम्
गोभी	गोजिह्वा
गाजर	गाजरम्
प्याज	पलाण्डुः
लहशुन	लशुनः
बथुआ	वास्तुकः
चौराई	तण्डुलीयकः
पालकी	पालक्या
पोई	पोतकी
सेम	शिम्बिः
पोदीना	पुदिनः
सोआ	शतपुष्पा
बण्डा	पिण्डालुः
ओल	शूरणः

पेशावर-वर्ग

मशाला	वेसवारः
जीरा	जीरकम्
धनिया	धान्यकम्
मिर्च	मरिचम्
आदी	आर्द्रकम्
हल्दी	हरिद्रा
सौंफ	मधुरिका
मेथी	मेथिका
जवाइन	यवानी
हींग	हिंगुः
लौंग	लवङ्गम्
लाची	एला
तेजपात	तेजपत्रम्
नमक	लवणम्
सेंधा नमक	सैन्धवम्

पात्र-वर्ग

बरतन	पात्रम्
बटलोही	स्थाली, उखा
कराही	कन्दुः
तावा	रिजीषम्

कर्छुल	दर्विः (स्त्री)
सड़ंसी	संदंशकः
चिमटा	,,
चमचा	चमसः
थाली	स्थालम्
कटोरा	कंसः, करोटिः
घड़ा	घटः, कलशः
लोटा	जलपात्रम्
गिलास	गल्लकः
कसोरा	शरावः
हँड़िया	हण्डिका

भक्ष्य-लेह्य-पेय-चोष्य-वर्ग

चावल	तण्डुलम्
भात	भक्तम्
दाल (कच्ची)	द्विदलम्
दाल (रंधी)	सूपम्
मांड	मण्डम्
खिचड़ी	कृशरा
आटा	पिष्टकम्
कनिक	कणिकः
मैदा	समिता
लोई	लोप्त्री
रोटी	रोटिका
लिट्टी, वाटी	अंगारकर्कटी
चोखा, भर्ता	भरित्रम्
भाजी	भाजी
पूड़ी	शष्कुली
सोहारी	सोमालिका
लपसी	यवागूः
हलुआ	संयावकः
मलाई	सन्तानिका
वेसन	वेसनम्
बड़ा	वटकः
बड़ी	वटी
पापड़	पर्पटः
कढ़ी	क्वथिता
पूआ	अपूपः, पूपः
चिउड़ा	चिपटकः
सत्तू	सक्तुः
अंचार	आसुतम्
चटनी	अवलेहः
अमावट	आम्रावर्तः
भूजा	भर्जनम्
होरहा	होलकः
लावा	लाजाः
घुघनी	कुल्माषः
चीनी	शर्करा, सिता
मिश्री	सितोपलः
गुड़	गुडः
मिठाई	मोदकम्
लड्डू	लड्डुकम्
जलेबी	कुण्डलिनी

मान-वर्ग

छटाँक, कनवा	कणमः

6662

ज	पाव	कुडवः	कलम, पेन	लेखनी, कलमः
बल	पेर	सेरः, प्रस्थः	फौन्टेनपेन	मसिलेखनी
दी		मणम्	दावात	मसिधानी
षक		गजः	स्याही	मसी
		धुरा	पेन्सिल	तूलिका
	शा	काष्ठा	कॉपी	लिपिपुस्तिका
कारी		विग्रहा	रजिस्टर	पंजिका
लू	अ	वराटकम्	पटरी	पट्टिका
वल	प	पणः	तख्ता	श्यामपट्टम्
हड़ा	व	आणकम्	सोखता	शोषकपत्रम्
ही	अ	सामग्री वर्ग	परकाल	कर्कटम्.
ी	को	कागदः, पत्रम्	खड़िया	खटिका
तरोई	राज			
ड़ा, नेनुआ	मह			

अव्यय वर्ग

व	यहाँ	यथा	जैसे	अद्य	आज	शीघ्रम्	जल्दी
व	वहाँ	तथा	वैसे	श्वः	कल	शनैः	धीरे
	जहाँ	कथम्	कैसे	ह्यः	कल	आम	हाँ
त्र	कहाँ	कुत्र	कहाँ		(बीता)	नहि	नहीं
यदा	जब	इयत्	इतना	परश्वः	परसों	ऋते	सिवा
तदा	तब	कियत्	कितना	प्रातः	सबेरे	कृते	लिये
कदा	कब	तावत्	उतना	सायम्	शाम	अस्तु	अच्छा, खैर
इदानीम्	अब	यावत्	जितना	पूर्वम्	पहले	अवश्यम्	जरूर
इतः	यहाँ से	बहु	बहुत	पश्चात्	पीछे	पुनः	फिर
ततः	वहाँ से	ईषत्	थोड़ा	अग्रे	आगे	कदापि	कभी
यतः	जहाँ से	किञ्चित्	कुछ	अधः	नीचे	अत्रैव	यहीं
कुतः	कहाँ से	मुधा	बेकार	ऊर्ध्वम्	ऊपर	तत्रैव	वहीं

———

ग्रन्थ आ० सं० 6662